

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN): I beg to lay on the Table a statement correcting the reply given to Parts (b) and (c) of Starred Question No. 668 on 15th April, 1974 by Shri N. C. Parashar regarding uniformity in selection, appointment and tenure of Vice-Chancellors.

Statement

In reply to Parts (b) and (c) of the Starred Question No. 668 asked by Shri N. C. Parashar on April 15, 1974 in this House regarding uniformity in selection, appointment and tenure of Vice-Chancellors, it was stated that the age of retirement of Vice-Chancellors of Central Universities is 65 years. The position stated was slightly incorrect. While necessary provision for the retirement of the Vice-Chancellors at the age of 65 years has been made in the Statutes of the Aligarh Muslim University, Delhi University, Jawaharlal Nehru University, North-Eastern Hill University and the Visva-Bharati, proposal for making a similar provision in the Statutes of the Banaras Hindu University is still under consideration.

It is regretted that the inaccuracy could not be detected earlier.

13.28 hrs.

RE CONDUCT OF MEMBER

अध्यक्ष महोदय : मैं आप के सामने यह बात बड़ी सोच-समझ कर कह रहा हूँ—मेरे पास एक-आध मेम्बर ने लिख कर भी भेजा है, एक मेम्बर साहब ने जवानी भी बात की है, अपोजीशन के श्रीर इधर के मेम्बरों ने भी कहा है—इस हाउस के एक मेम्बर कुछ दिन हुए किसी गलत हालत में इस हाउस में आ गये और काफ़ी शोर शराबा किया। चेयरमैन ने भी अपना खुलासा करवाने के लिये कहा—

चलो, मेरी गलती थी, छोड़ जाइये। मैंने इस बारे में कुछ मेम्बरों से सलाह की है कि क्या करना चाहिये। किसी ने भी उसको एप्रूब नहीं किया कि ऐसा कण्डकट होना चाहिये मेरे पास दो-तीन दफ़ा पहले भी शिकायतें आई हैं कि ऐसी हालत में किसी बिज़नेसमैन के पास चले गये, कभी होटल में चले गये...

श्री एस० एम० बनर्जी (कानपुर) : उन्होंने ग्राण्ड होटल में बैठ कर वियेटर किया था।

अध्यक्ष महोदय : ऐसी बहुत सी शिकायतें मेरी नोटिस में आई थीं, मैंने कुछ लोगों से भी पूछा था, फिर भी उनको बेनिफिट दे दिया गया—कुछ पी कर वह बैठते हैं। लेकिन बढ़ते-बढ़ते काम ज्यादा खराब हो गया कि वह अन्दर तक भी पहुँचे। तो मैं आप को यकीन दिलाता हूँ कि मैं इस के बारे में एक्शन लेने के लिये सोच रहा हूँ। मैंने सोचा कि इतना ही कह दूँ, नाम नहीं लेता, सभी जानते हैं, देखिये दुनिया में घर बैठे कुछ करते हैं, बाहर भी कुछ करते हैं और आजकल तो किसी में कहा भी नहीं जा सकता, लेकिन हाउस में आ कर ऐसे करें मैं इसका बर्दाश्त करने के लिये तैयार नहीं हूँ। बाहर हो जाये तो उसकी रेमेंडी भी अवैलएबिल है पुलिस के हवाले विये जा सकते हैं, लेकिन हाउस के अन्दर तो मैं श्रीर हाउस ही एक्शन ले सकते हैं। इसलिये कुछ अच्छा बात नहीं ज़ची। तीन साल से तीन-चार सतवा शिकायत आयी, पहले कहीं बिज़नेसमैन के पास चले गये यह नहीं दोगे, वह नहीं करोगे, मुझे कहा गया। लेकिन कुछ हद होनी चाहिये। बाहर होते-होते हाउस में अब आ गये, श्रीर बेचारे चेयरमैन ने अपनी खलासी कराने के लिये गले से उतारी बाताइसलिये दोनों तरफ से मुझ को कहा गया। यह न सोचिये कि इसमें मैं चुप बैठा मैं हूँ। सोच रहा हूँ कि क्या करना चाहिये।